SHRIMATI JAYA BACHCHAN (Uttar Pradesh): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI VAIKO (Tamil Nadu): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

श्री रवि प्रकाश वर्मा (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

चौधरी सुखराम सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

डा. चन्द्रपाल सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

Need for availability of all Official Languages and Classical Languages in Devanagari script

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश): मान्यवर, मैं माननीय सदन का ध्यान विभिन्न भाषाओं के संदर्भ में आकर्षित करना चहता हूँ। भाषा सिर्फ अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि हमारी संस्कृति और सभ्यता को जोड़ने के लिए भी एक अच्छा माध्यम है। 1961 की जनगणना के अनुसार, देश में लगभग 1,652 भाषाएँ और बोलियाँ हैं। जिनमें 22 भाषाओं को official language का अधिकार मिला हुआ है। मान्यवर, मैं आपको भी धन्यवाद देना चाहूँगा कि आपने लोगों को प्रोत्साहित किया, provoke किया कि वे सदन में अपनी-अपनी बोलियों में, अपनी-अपनी भाषाओं में भी अपने विचारों को व्यक्त करें, लेकिन सबसे बड़ी बात यह होती है कि जब लोग अपने विचार व्यक्त करते हैं, तो अधिकांश लोगों को जानकारी नहीं हो पाती है कि वे क्या बोल रहे हैं? मैं निश्चित रूप से यह कहना चाहता हूँ कि संस्कृत, तमिल, कन्नड़, तेलुगू, मलयालम, ओड़िया, ऐसी शास्त्रीय भाषाएं हैं, जिनमें देश की सांस्कृतिक धरोहर बोलती है, लेकिन सब छुपा हुआ है। मैं कहना चाहता हूँ कि इसके आधार पर साहित्य प्रचारित और प्रसारित करना चाहिए, इनमें विद्यमान सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित करना चाहिए। महोदय, देश में जितनी भाषाएं चलती हैं, उनमें हिन्दी आज देश के कोने-कोने में बोली भी जाती है, समझी भी जाती है। आज 22 भाषाएं ऐसी हैं, जो official languages हैं। मेरा आग्रह है कि अगर उनकी लिपि को पूरे तौर पर देवानागरी लिपि कर दिया जाए, तो पूरे सदन में जितने भी लोग हैं, वे जो भी बोलेंगे, उनकी बात समझ में आ जाएगी। जो प्रोत्साहन आपने दिया है, वह सब निश्चित रूप से होगा। मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि उन 22 official भाषाओं की लिपि, देवनागरी लिपि की जाए और उसमें छपाया भी जाए, यहाँ बोला भी जाए और लोगों को जानकारी दी जाए। ...**(व्यवधान)**...

SHRI VAIKO: *

MR. CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... This is not a debate; you know it. ...*(Interruptions)*... This will not go on record. ...*(Interruptions)*... He has expressed his views. ...*(Interruptions)*... You have got a right to agree or disagree. ...*(Interruptions)*... Let there be no unnecessary controversy in this. ...*(Interruptions)*... This is not the right thing. ...*(Interruptions)*...

श्री शिव प्रताप शुक्ल: मान्यवर, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि अगर इसको कर किया जाए, तो निश्चित रूप से सभी लोगों को हर भाषा की जानकारी हो सकेगी और आज यह अधिकांश भाषाओं की लिपि भी है, तो इसे पूरा किया जाए।

MR. CHAIRMAN: Every Member has got a right to express his views; he is permitted. If any Member disagrees with him, he has got a right to disagree with him, but not under this rule. Under this rule, hon. Members can only make their views. If you don't agree with it, don't agree. I agree that you don't agree.

श्रीमती कान्ता कर्दम (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

लेफ्टीनेंट जनरल (डा.) डी.पी. वत्स (सेवानिवृत्त) (हरियाणा): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री रामकुमार वर्मा (राजस्थान): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री कामाख्या प्रसाद तासा (असम): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री शमशेर सिंह मन्हास (जम्मू-कश्मीर): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री कैलाश सोनी (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

Unacceptable portrayal of Puranas by a dance group in Canada

DR. SONAL MANSINGH (Nominated): Sir, I want to draw the attention of this august House to something that may seem not of immediate importance, but, I think, the echoes go far and wide. Recently, a dance presentation in classical Bharatanatyam

---

*Not recorded.